प्रेस विज्ञप्ति

प्रथम द्वारा 21 अक्टूबर 2015 को "लाखों में एक" अभियान का लोकार्पण।

प्रथम और असर सेंटर ने ***लाखों में एक*** अभियान की शुरुआत की है। यह अभियान भारत के 1,00,000 गाँवों और शहरी बस्तियों में प्राथमिक शिक्षा की स्थिति को बेहतर बनाने के लिए स्वयंसेवियों को प्रोत्साहित व संगठित करेगा। अभियान की शुरुआत 21 अक्टूबर को एक वेबसाइट के लॉन्च तथा प्रथम की ब्रांड एम्बेसेडर ***वहीदा रहमान*** के संदेश से हुई है।

यह वर्ष असर और प्रथम दोनों के लिए एक ऐतिहासिक वर्ष है। प्रथम के 20 वर्ष और असर के 10 वर्ष पूरे हो चुके हैं। इन वर्षों में हम लगातार प्रयत्नशील रहे कि हर बच्चा स्कूल पहुंचे और सही तरीके से सीखे। इस दौरान असर ने स्कूल नामांकन और शैक्षिक उपलब्धि की सालाना रिपोर्टों के जरिये जमीनी हालात को समझने व उसका समाधान ढूंढने की दिशा में लोगों को सोचने के लिए प्रेरित किया। वहीं प्रथम ने 'रीड इंडिया' अभियान के माध्यम से समुदाय और सरकार के सहयोग से बच्चों को पढ़ने तथा साधारण गणित में दक्षता हासिल करने के लिए लगातार प्रयास किया। मूल्यांकन पद्धतियों पर काम करने वाली तमाम संस्थाओं ने भी 'रीड इंडिया' अभियान को बेहद कारगर बताते हुए इसकी प्रशंसा की है।

तीन वर्ष पूर्व योजना आयोग ने अपनी नीति में बदलाव करते हुए इसे आदानों की बजाय शैक्षिक परिणामों की ओर उन्मुख किया। मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने भी पहली और दूसरी कक्षा में पढ़ने और गणित करने की क्षमता में सुधार पर ज़ोर देना प्रारंभ किया। इसके बाद कई राज्य सरकारें शैक्षिक गुणवत्ता को महत्त्व देने की राह पर निकल पड़ीं। शैक्षिक गुणवत्ता **राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन** सरकार के दस्तावेजों में नई शिक्षा नीति के सूत्रीकरण के मकसद से होने वाली चर्चाओं में प्रमुखता से शामिल है।

आज राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर निम्न शैक्षिक स्तर को एक व्यापक समस्या के तौर पर चिन्हित किया गया है। हम समझते हैं कि यह सही अवसर है जब देश भर में नागरिकों और समुदायों से संपर्क किया जाए ताकि वे भी इन परिस्थितियों को बदलने के प्रयासों में हिस्सेदार बनें।

भारत ने लगभग सभी बच्चों को स्कूल में नामांकित करने में सफलता हासिल की है। अब ज़रूरत एक ऐसी पहल की है, जिसमें नागरिकों, सरकारों, विद्यालयों और समुदायों का ध्यान शैक्षिक स्तर के सुधार पर केंद्रित हो। अगर माता-पिता, शिक्षक, समुदाय और सरकार साथ मिलकर काम करेंगे तो एक बड़ा बदलाव अवश्य आएगा। 2015 में एनुअल स्टेटस ऑफ़ एजुकेशन रिपोर्ट (असर) का आयोजन भारत के सिर्फ दो राज्यों में किया जायेगा। वे दो राज्य

हैं- पंजाब और महाराष्ट्र। लेकिन प्रथम और असर की टीम इस साल देश भर में "लाखों में एक" अभियान की अगुवाई करेगी।

"लाखों में एक" अभियान सरकारी संस्थाओं, गैर-सरकारी संगठनों, कॉर्पोरेट और फाउंडेशनों की सामूहिक पहल से जनवरी 2016 तक भारत के एक लाख गाँवों व समुदायों तक पहुंचेगा। इसके अंतर्गत गाँव व समुदायवासियों को अपने शैक्षिक स्तर का आकलन कर उन्हें खुद की स्वैच्छिक पहल से समुदाय की स्थिति में बदलाव लाने के लिए प्रेरित किया जाएगा। पहले चरण में सम्बंधित संस्थाएँ विभिन्न स्तर पर सरकारी संस्थाओं व राज्य के नीति निर्धारकों को प्रेरित करेंगी और प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में पढ़ने, लिखने और गणित करने की दक्षता में स्थायी सुधार के लिए ज़रूरी कदम उठाएंगी।

अभियान के बाद के चरणों में देश भर के नागरिकों के साथ मिलकर "पढ़ता-लिखता गाँव" का निर्माण किया जाएगा। शैक्षणिक वर्ष 2016-17 की शुरुआत तक ज़्यादा से ज़्यादा ज़िला प्रशासन और राज्य सरकारों को शैक्षणिक स्तर में सुधार (अगर पहले संभव न भी हुआ हो) की खातिर क़दम उठाने के लिए तैयार करना भी अभियान का एक लक्ष्य है।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:

नाम: रणजीत भट्टाचार्या; संपर्क नंबर: 011- 2671-6084;

ई-मेल: lakhonmeinek@pratham.org

www.lakhonmeinek.org | www.pratham.org | www.asercentre.org